भगवत् कृपा

गुरुभक्ति यज्ञ 1937 - 1997

स्वामी नारायण

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 20 अंक : 6	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चंदा : 50.00
गुरुवार 26/6/97	जून-1997	प्रति अंक : 5.00

आओ ! गुरुपूजन करें.....

हम सभी के लिए अत्यधिक आनंद की बात है कि-
इत्तफाक से इस बार **गुरुपूर्णिमा**
20 जुलाई' 97, रविवार को आ रही है।
तो आईये, हम सभी इस दिन
सुबह ठीक साढ़े छः बजे इकट्ठे होकर
धून, भजन, दर्शन, सत्संग से लाभान्वित होकर
महाराज, सभी के आदि गुरु गुणातीत,
ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज एवं
गुणातीत स्वरूपों की मूर्ति का पूजन करें....

समयः सुबह 6.30 से 9.30

प्रसादः सुबह 9.30

स्थानः 'अनिर्देश', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग,
अशोक विहार-III, दिल्ली-110 052

गुरुपूर्णिमा का शुभ अवसर.....

'गुरुपूर्णिमा' का परम पवित्र पर्व यानि-नई उमंग और नये उत्साह से गुरुपूजन करके गुरु को सर्वस्व समर्पित करके उनकी मर्जी के मुताबिक ही पल-पल जीवन जीकर संबंध दृढ़ कर लेने की प्रार्थना करने का मंगलकारी दिन.....

वास्तव में 'गुरु' ही हमारे लिए प्रभु का साक्षात् स्वरूप होता है। लेकिन, एक बात यह भी है कि हर एक भगवे कपड़े पहनने वाले में सच्चे गुरु नहीं मिलते। गुरुहरि योगीजी महाराज बहुत स्पष्ट रूप से कहते कि-गुरु की शुद्धि तीन प्रकार से देखनी।

- एक तो उनके गुरु कैसे समर्थ हैं?
- दूसरा उनका स्वयं का वर्तन देखना।

और

- तीसरा उनसे तैयार हुए शिष्य कैसे हैं?

यूं तीन प्रकार की शुद्धि परख कर गुरु करना। ऐसे सत्पुरुष के अवतार परमार्थी हैं, परमार्थी यानि–भगवान परायण-भगवान में निमग्न। भगवान के सिवा उसे कुछ नहीं चाहिए। केवल भगवान का ही आधार लेकर वह जीवन जीता है। ऐसे संत मिलने कठिन हैं और मिलने के बाद पहचानने मुश्किल हैं। कोई सिद्ध महात्मा पैसा दे, संकल्प पूरे करे; मानो–लड़का, बंगला, कोठी, गाड़ी इत्यादि दे, पर-मोक्ष नहीं दे पायेंगे। मान-अपमान में जिसे समभाव हो और स्त्री, धन व कीर्ति का रंचमात्र रस या राग ना हो-अखंड प्रभुमय रहते हों-प्रभु में रहते हों, ऐसे अनंत शुभ व कल्याणकारी गुण जिस संत में हों, उसमें भगवान अखंड निवास करते हैं और वह संत अनंत जीवों के कल्याण का द्वार है। ऐसे संत का सामर्थ्य क्या? रिद्धि-सिद्धि, ऐश्वर्य, चमत्कार बताना, संकल्प पूरे करना आदि–यह सामर्थ्य नहीं, लेकिन सर्वसिद्ध होते हुए भी तुच्छ जीवों से सहन करना, **अपनी सामर्थ्य दबा कर छुपे रहना-**वह है उनका सच्चा सामर्थ्य !

ऐसा सच्चा गुरु हमारा मूल अज्ञान टालकर, प्रकृति का रूपांतर करके दैवी गुण बख़्शिश में देता है और स्वयं जैसा ही भगवान की मूर्ति के सुख का भोक्ता बनाने के परिश्रम में निरन्तर लगा रहता है। चाहे उसके लिए उसे जन्मों तक की धीरज क्यों ना रखनी पड़े.....

भारतीय संस्कृति व वैदिक परम्परा के अनुसार गुरुपूर्णिमा के मंगलकारी दिन पर शिष्य गुरु का पूजन करके गुरुदक्षिणा में अनेक रूपों में भेंट रख कर प्रार्थना करता है। बाहरी दृष्टि से गुरुपूजन की यह विधि पुरातन काल से चलती आई है। यह विधि स्थूल रूप से भले हर शिष्य को करनी ही चाहिए। परन्तु दूसरी ओर इसकी गहराई में शिष्य का गुरु के प्रति मन, बुद्धि, चित्त, अहम् से परे होकर समर्पित होना जरुरी ही नहीं, अनिवार्य है-जिसे आंतरिक गुरुपूजन कहा जाये.....'**आंतरिक गुरुपूजन**' यानि–गुरु को ही हमारे जीवन की पल–पल का कर्ता हर्ता मानकर गुरु की मर्जी में मिट जाना।

हमारे पूर्व के बलिष्ठ संस्कारों के कारण कहो या तो प्रभु की खूब कृपा के कारण कहो-ऐसे गुणातीत पुरुष सामने से हमारे जीवन में आए, हम पर अकारण फिदा हो गये.....स्वामिनारायण सम्प्रदाय अखंडित शुद्ध गुरुपरम्परा का सम्प्रदाय होने के कारण मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी से लेकर भगतजी महाराज, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, प.पू. काकाजी, प.पू.पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई–सभी ने अपने गुरु के पास स्वामी सेवकभाव व दासभाव से निरन्तर जीकर ऐसे कल्याणकारी दैवी गुण गुरु से बख़्शिश में पाये हैं, जिससे कि–शिष्यों को दासत्व भक्ति का सचोट मार्गदर्शन, सूझ, प्रेरणा, बल अपने आप ही मिलता रहता है.....

यूं इन सभी गुणातीत स्वरूपों ने 'सच्चे सेवक' की परिभाषा केवल उपदेश देकर नहीं, बल्कि स्वयं जीकर बताई....हममें से बहुतों ने प.पू. काकाजी का जीवन करीब से देखा है....उन्होंने गुरुहरि योगीजी महाराज की जो-जो मर्जी देखी, बस उसी के लिए हर प्रकार से वो फनां होने लग पड़े.....यह सब करने में वे खूब बुरे दिखाई पड़े, अनेक आक्षेप लगे, अपमान भी हुआ, पर एक ही निगाह-मेरे गुरु.....!

जैसे कि–गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. काकाजी को प.भ. नंदाजी के लिए चुनाव लड़ने जाने की आज्ञा करी....यह सेवा गुरुहरि योगीजी महाराज की नहीं, मंदिर की नहीं-सत्संग समाज की कही जाये ऐसी नहीं थी-कोई लोक सेवा भी नहीं थी ! ऊपर से देखने में कहां चुनाव-राजनीति आदि और कहां धर्म? धर्म में राजनीति का क्या मेल? हम सिर्फ कल्पना ही करें कि अगर हम प.पू. काकाजी की जगह होते तो.....!!! प.पू. काकाजी का व्यापार भी उन दिनों जोर-शोर से चल रहा था। पर, वह कुछ भी गिने बिना लगातार तीन महीने तक नंदाजी के चुनाव प्रचार के लिए चल पड़े.....वहां भी संजोग सारे विपरीत ! पर, प.पू. काकाजी की

नज़र तो एकमात्र 'योगी' के वचन की ओर थी.....

फिर, पढ़े-लिखे 51 युवकों को साधु बनाने की गुरुहरि योगीजी महाराज की योजना आई ! 'गुरु' की इस मर्जी में उन युवकों को तैयार करने प.पू. काकाजी जुट गए। सब का भयंकर विरोध, गालियाँ, अपमान सहकर भी वो लगे रहे..... **यहां तक कि-गुरुहरि योगीजी महाराज का नाम तक बुरा दिखने में नहीं आने दिया** ! इससे भी अधिक 'गुरु' को भी अपने इस सेवक का कल्पना से परे का **कैसा भरोसा कि** अगर **योगीजी महाराज** को कोई इस बारे कुछ कहने आता, तो वे **कह देते कि यह सब मैं नहीं कर रहा...दादुभाई कर रहे हैं**..... धन्य है गुरु को और धन्य है ऐसे गुरुनिष्ठ सेवक को....

51 युवकों को साधु की दीक्षा देने के बाद नयी सेवा बहनों के भगवान भजने की राह खोलने की आई.... प.पू. काकाजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज की मर्जी देखी..... स्वामिनारायण धर्म की मर्यादा के अनुसार त्यागी साधु, बहनों के भगवान भजने का कार्य उठा नहीं सकते। सो, इस दुष्कर कार्य के लिए भी सर्वप्रथम प.पू. काकाजी ने अपना कंधा दिया। सत्संग के ही अंदरूनी समाज का विरोध होते हुए एकधारी लगन से प.पू. काकाजी बस एक ही निशान लेकर- गुरु की मर्जी है, सो मुझे करना ही है-यूं लग ही पड़े। रूढ़िचुस्त संकुचित दायरे वाले समाज में यह बीड़ा उठाना लोहे के चने चबाने से अधिक कठिन था...बेहद अपमान हुए... प.पू. काकाजी बे-आबरू बने.....इससे भी अधिक जिनके उत्थान के लिए बुरे दिखाई पड़े, इतना परिश्रम किया वो भी आगे जाकर उनको समझ नहीं पाये ! तो भी प.पू. काकाजी ने जीवनपर्यंत ईशारा तक नहीं दिया कि अरे ! यह क्या? यह थी उनकी अजोड़ गुरुभक्ति, साधुता....सच ! इस पुरुष ने तो बापा की ही मर्जी में मिट जाने की ठान रखी थी....

इसके बाद–दिल्ली में अक्षरपुरुषोत्तम का मंदिर बने, सत्संग का विकास हो..... गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज की यह इच्छा थी। प.पू. काकाजी अपने गुरु के वचनों की ओर सतत् जागृत थे। 1966 में संस्था द्वारा हमें अलग करने के बाद तुरन्त 1967 से ही प.पू. काकाजी ने 'गुरुजी' और संतों को दिल्ली भेजने का खूब आग्रह रखा कि हमें निमित्त बन कर बापा का संकल्प पूरा करना है..... दिल्ली में अक्षरपुरुषोत्तम का मंदिर करना है.... इसमें भी कई प्रकार की बाहरी व अंदरुनी कठिनाईयाँ आईं..... पर 1967 से 1986 तक वे इसके लिए लगातार परिश्रम करते रहे और आखिर वो संकल्प साकार किया..... आज दिल्ली में उनके ही संकल्प से एक नूतन आत्मीय गुणातीत समाज का सर्जन हम देख रहे हैं..... अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठित होकर मंदिर भी बना है..... जो अपने आप में एक अजोड़ गुरुभक्ति की मिसाल बन कर हम सब को ऐसा 'गुरुनिष्ठ सेवक' होने का संदेश देता ही रहेगा। इन सभी कार्यों में प.पू. काकाजी को कोई निजी महत्त्वाकांक्षा, यश-कीर्ति पाने की अपेक्षा तनिक भी नहीं थी–बस अपने गुरु के वचन को झेल कर मिट जाने की ही एक चाहना थी...

वास्तव में देखा जाए तो उपरोक्त सारे प्रसंग स्पष्ट बताते हैं कि प.पू. काकाजी गुरुहरि योगीजी महाराज के अन्तर का अभिप्राय अत्यधिक स्पष्टता से समझे हुए थे ! गुरुहरि योगीजी महाराज हम सब से कैसी अपेक्षा रखते हैं– हमें किस राह पर ले जाना चाहते हैं..... **प.पू. बापा ने जो एक अनोखा spiritual nucleus तैयार करने महामानव का समाज संस्था से अलग किया है–उसका उन्हें स्पष्ट दर्शन था** ! हमें संस्था से अलग करने से एक साल पहले से प.पू. बापा कई बार सभाओं में कहते कि–**'कुछ नया करके दिखाना है.....'** उस निशान का प.पू. काकाजी को स्पष्ट वीजन था... 1966 से प.पू. काकाजी के हर प्रवचन, हर पत्र से पता चलता है कि बापा के निशान की ओर ही हमारी नज़र रखवाने का निरन्तर प्रयत्न करते ही रहे–करते ही रहे..... वही **चीला-चालू सत्संग ही अगर कराना होता तो बापा हमें संस्था से अलग करते ही क्यों?**

1975 के एक letter में तो उन्होंने लिखा भी कि–

'बापा की एक दिव्य योजना–

40-50 पू. भगतजी-जागास्वामी जैसे तैयार हो जायें उसके संजोग स्वयं मिट कर खड़े कर गये।

परन्तु,

कोई प्लॉटफोर्म अब तक तैयार नहीं हुआ।

सो, अंतर में दर्द होता है कि–

हमने प.पू. बापा की जैसी चाहिए, वैसी शोभा बढ़ाई नहीं'।

और.....

1984 में प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की सुवर्ण जयंती के अवसर पर आणंद में अंग्रेजी में प्रवचन करते हुए **प.पू. काकाजी ने खिन्न हृदय से कहा–**

'What legacy Shashtriji Maharaj and Yogiji Maharaj gave us? what are we boasting? Is this the result after 25 years? shall we little bit introspect what has happened?'

और इच्छा रखी कि–

'we may not commit the same mistake before the celebration comes to us of Gunatit Dwishatabdi.....'

और, आखिर 1986 जनवरी विद्यानगर गुणातीत ज्योत में– **'गुणातीत द्विशताब्दी बड़ी धूमधाम से अच्छी मनाई। पर, मैं इसे 'अच्छी' नहीं मानता.....'** यूं कह कर–

अपने उस अंतिम प्रवचन में उन्होंने स्पष्ट दिशा की सूझ देने हमें 'मैग्नाकार्टा' रूप टार्च लाईट दी कि अब भी हम सजाग हों कि हमें क्या करने बापा ने संस्था से अलग किया !!

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी भी एक बात करते रहते हैं– **'निशान चूक माफ, नहीं माफ नीचा निशान....'**

तो, प.पू. स्वामिजी की इस बात पर गौर करें और इस गुरुपूर्णिमा के मंगल अवसर पर प.पू. काकाजी जैसे स्वरूपनिष्ठ, शूरवीर, गुरुनिष्ठ सेवक की गुरुभक्ति के प्रसंगों की–बातों की स्मृति करके अपने निशान की ओर फिर से जागृत बनें..... अन्तर से प्रार्थना करें कि–हे महाराज ! हे स्वामी ! हे सर्व गुणातीत स्वरूपों ! हम कभी भी–कैसे भी संजोगों में अपना निशान चूकें नहीं और 'गुरु' को कभी भी मोहताज-लाचार ना करें..... प.पू. काकाजी तो वैसे माफी देते ही रहे और देते रहेंगे..... सो भले अब तक निशान चूक गए लेकिन फिर से उस निशान की ओर अग्रसर होने लग पड़े..... इसी संकेल्प का गुरुपूर्णिमा के परम पावन अवसर पर हमारे गुरु को अर्घ्य अर्पण करें.....

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

अनिर्देश की गतिविधियाँ.....

★ **7 जून' 97** की शाम को प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी 'अनिर्देश' मंदिर पधारे, तो उस उपलक्ष्य में ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज की स्मृति करने 'भजन संध्या' रखी गई। प.भ. राकेशभाई, प.भ. विनोद भईया, प.भ. ऋषि ने प.पू. काकाजी महाराज की स्मृति कराते भजन गाकर सभी को भावविभोर कर दिया.....भजन संध्या में प. पू. स्वामिजी का पधारना-तो स्वाभाविक है कि सभी भक्त उनकी परावाणी से भी वंचित क्यों रह जाते? इसलिए, पहले तो प.पू. गुरुजी ने बात करते हुए कहा-

'.....जब हमारा मन का तन्त्र बिगड़ा हो, जब हमारा दिमाग साथ देने तैयार ना हो.....कुछ शारीरिक बीमारी आ जाए, कुछ व्यावहारिक मुश्किल आ जाए-तब हमारा विश्वास चला जाता है कि हमने तो इतना भजन किया, सेवा की तब भी क्या मिला? उस समय हमें सत्पुरुष की कही बातों का भरोसा नहीं रहता कि–उन्होंने जब हमारी जवाबदारी ली है, तो वो हमारा पूरा करवा ही देंगे.....हमें तो बस 'भुलका' बन जाना है.....हमें कुछ करना नहीं है-बस इनके कहे वचन का भरोसा रख कर 'भुलका' बन जाना है....'

प.पू. गुरुजी के बाद प.पू. स्वामिजी ने आशिष देते हुए कहा-**'.....भजन दिल की सच्चाई से, उसमें लय होकर गाओगे, तो वो प्रार्थना प्रभु को पहुँचेगी.....पू. काकाजी 1967 से हमें यह बात समझाते थे- 'भुलका' बन कर जीओ बस! पैर से सिर तक मैं आपका हूँ, दंडवत् करने के पीछे यह भावना होती है.....आरती का दूसरा अर्थ-आर्तनाद है। बापा ने एक संत को कहा कि ऐसी प्रार्थना करते हुए आरती करना कि मेरी इन्द्रियाँ–अन्तःकरण से आपके सुख का भोगी बनूँ....मेरी पंचविषय की गटर छुड़वाना.....मेरे में समझदारी प्रगटाना। कथावार्ता मन, देह, इन्द्रियाँ-अंतःकरण से परे होकर सुनने का प्रयत्न करना। बालक बनकर प्रार्थना करोगे तो भगवान आपकी प्रार्थना जरुर सुनेंगे...मेरे में कुछ नहीं-आप ही मेरा सर्वस्व-प्राणाधार, सनातन-दिव्य स्वरूप हो।**

– **'भुलकुं' मीन्स निराधार**
– **'भुलकुं' मीन्स मैं जीरो**
– **मुझ में जो कुछ भी है वो प्रभु का ही दिया हुआ है-वो 'भुलकुं'।**

समझदारी से किए भजन का प्रभु फल देते हैं.....कथावार्ता का अगर मनन चिंतन नहीं करोगे, तो तुम अवश्य fail हो जाओगे....'भुलका' बनने की रूचि रखना। गुणातीत पुरुषों के दासत्व के प्रसंगों का निरन्तर मनन चिंतन करना.....सबके साथ बालक बनकर प्रभु के भाव से ओत-प्रोत रहना.....'

यूं प.पू. स्वामिजी, प.पू. गुरुजी की इस अनमोल सूझ को पाकर, प्रसाद पाकर सभी धन्य हो गए...

✡

★ **12 जून' 97**–ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज की जयंती के दिन 'यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं.....बलमस्तु तेजः ॥' श्लोक के नाद के साथ ही **पू. वशीभाई** की महापूजा का प्रारंभ हुआ.....'अनिर्देश' का वातावरण जो वैसे भी दिव्य है, पर इस दिन तो अनोखी दिव्यता का अनुभव हर एक को हुआ....और प.पू. गुरुजी के दिव्य सान्निध्य में पाँच बालकों का 'यज्ञोपवीत संस्कार' हुआ.....'महापूजा' में पू. वशीभाई ने बालकों व सभी मुक्तों के लिए प्रार्थना करी कि सभी के देह के, व्यवहार के या मन के द्वंद दूर हो जाएं...प.पू. गुरुजी ने बालकों को आशिष प्रदान करते हुए बात करी कि–

'.....काकाजी' भुलका शब्द खूब बोलते थे। इस बार स्वामिजी जब आए तो भुलका की बातें खूब करी। अभी यज्ञोपवीत वो द्विजसंस्कार-दूसरा जन्म हो गया। एक नया जीवन चालू हो गया....प्रगट के उपासकों के लिए तो पल-पल मरना, पल-पल नया जीना....पल-पल अपने मन के साथ लड़ाई-संघर्ष ! वो करते रहने के बजाय– लड़ते रहने के बजाय हमें प्रभु प्रगट मिले हैं, उसकी शक्ति का आह्वान करें। जब भी कोइ प्रोब्लॅम आए-भीतर की, बाहर की–कोई भी कुरुक्षेत्र भीतर में उठे-काकाजी एक बात करते थे पाँच बम्बा वालों को

बुलाओ-'स्वामिनारायण मंत्र'.....एकदम भीतर से और ऐसे सात प्रगट लिविंग संतों की स्मृति-प्रभु के नाम के साथ....भक्त सहित भगवान की स्मृति करके-हे प्रभु मुझे सहायभूत होने के लिए आ जाओ.....वो एक सैकेण्ड भी राह नहीं देखेंगे। ऐसा भी नहीं कहते कि मैं ज़रा यह निपटाकर आ रहा हूँ। हृदय में जहां धबक-धबक होता है वहां काकाजी या ऐसे गुणातीतभाव को पाए हुए संत–प्रभु की मूर्ति अखंड विराजमान है। असल में तो वो राह देखकर बैठे होते हैं कि कब मुझे यह याद करे-पुकारे। अब यज्ञोपवीत संस्कार के नए जन्म पर हम सबको-इन बच्चों का तो निमित्त हुआ-हम सबको यही करना है। कोई भी छोटी-मोटी समस्या भीतर की या बाहर की आ जाए-....'स्वामिनारायण.....'। मेरा यह दावा है कि आज की यह सभा को याद करके- मैं हमेशा कहता हूँ कि वशी की महापूजा में भगवान दौड़कर आकर खड़े रह जाते हैं; देखो, आज के वातावरण में भी आपको लगा होगा कि प्रभु की अखंड हाजिरी है, तो वे प्रार्थना हम सबकी सुनते हैं.... वो स्मृति करके-ये सब सनातन स्वरूपों हैं, साक्षात् स्वरूपों हैं। वो कभी जाते ही नहीं हैं। हमें वो पल को शाश्वत् करनी है। सो हम सभी ये रामबाण इलाज-हर एक समस्या पर इस्तेमाल करें.....'

यज्ञोपवीत संस्कार का पवित्र वातावरण सभी को खूब भीतर तक स्पर्श कर गया..... कई तो बोले भी कि–'यह यज्ञोपवीत संस्कार अलग ही प्रकार का–आध्यात्मिक रीत का हुआ है.....' सभा का लाभ लेने के बाद सभी प्रसाद पाकर धन्य हुए.....

✡

★ **15 जून' 97, रविवार**-सायं ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के प्रति भक्ति अदा करने सारा भक्तगण 'अनिर्देश' के हॉल में एकत्रित हुआ। सारा वातावरण प.पू. काकाजी महाराज की स्मृतियों से भरा-भरा था। उसमें भी प.भ. राकेशभाई, प.भ. विनोद भईया, प.भ. ऋषि ने स्मृति कराते भजन गाकर सभा को दिव्यता में डूबो दिया। और....फिर प.पू. गुरुजी ने ब्रह्मप्रवाह पुस्तक के एक पत्र का निरुपण करते हुए बात करी कि–

'27 साल पहले भी काकाजी हमें यही बात करते रहे.....आज भी हम उसी चौराहे पर खड़े हुए हैं..... कर्ता और हर्ता-कर्ता तो मान लेते हैं। कोई अच्छी चीज़ बनती है ना, तो बापा ने कर दिया.....असल में बात तो यह है कि कर्ता और हर्ता दोनों ही प्रगट प्रभु हैं। प्रगट प्रभु का मतलब-प्रभु हमें जिस द्वारा प्रगट रूप से मिले हैं। कर्ताहर्ता पल-पल प.पू. बापा ही हैं। कोई अच्छा काम बन गया तो कहेंगे 'बापा ने कर दिया-बापा ने कर दिया' और ये गाते भी रहेंगे। लेकिन जब हर्ता लगते हैं तब ऐसा नहीं माना जाता। 'हमारी तकदीर ही खराब है। ऐसा था सो यह हुआ....फलां ने बिगाड़ दिया-यह कर दिया। हमारे कर्म ही ऐसे हैं। हमारे स्वभाव ही ऐसे हैं-तो ऐसे ही होने वाला है। हम बदलने वाले नहीं हैं.....'

.....हर्ता भी बापा ही हैं, लेकिन वो हर्ता हमारी भलाई के लिए है। हम वो भूल जाते हैं....सर्वोपरि हैं। कोई बात ऐसी नहीं है जो वो नहीं कर सकते। सुप्रीम पावर है। भगवान यानि? पल में चाहे सो करें। सर्वोपरि सत्ता–सुप्रीम सत्ता–सबसे परे प्रभु की सत्ता है। वह ब्रह्मसत्ता–सुप्रीम सत्ता के सामने बाकी सारी सत्ताएँ पतंगे जैसी हैं। सूर्य के सामने जैसे पतंगे होते हैं-खाक हो जाते हैं। लेकिन हम मानते नहीं हैं। इसकी जिसे समझ है वो निष्ठा मानी जाती है। जब तक ऐसी निष्ठा नहीं होगी-हमारे जीवन में स्थिरता, शांति, निश्चिंतता आएगी नहीं....प्रगट प्रभु-हमारे मालिक–सर्वोपरि, सर्व कर्ता हर्ता, वो धरती पर हैं, हमारे साथ हैं'-निश्चिंतता रहेगी। प्रगट की निष्ठा हुई उसका बैरोमीटर एक ही है कि हम निर्भय और निश्चिंत.....पल-पल डाईरेक्ट कन्ट्रोलिंग प्रभु का है। जिसे पप्पाजी कहते हैं कि ब्रह्मनियंत्रित समाज है। कोई भी चीज़ बने, उन्हें याद करना-मंत्र स्वामिनारायण और मूर्ति की स्मृति प्रगट प्रभु की। काकाजी के रूप में देखी है तो उनकी। मानो एक बार देखी हुई हो, तो यह मतलब नहीं कि सारी जिन्दगी वो मानवस्वरूप में तुम्हारे साथ रहेगी ही। एक बार देखा हो, उसकी स्मृति कर लेनी चाहिए। यंत्र, मंत्र और तंत्र एक। मंत्र स्वामिनारायण-तो मूर्ति जो है वो यंत्र है। उस यंत्र के साथ हमारे पूरे तंत्र को पिरो देंगे तो मंत्र अर्चिमार्ग से प्रभु को पहुँचता है....हम अपने तंत्र को ऐसा सेटअप कर लें ट्युन अप कर लें वो यंत्र के साथ, तुरन्त अर्चिमार्ग से प्रभु को हमारी आवाज़ पहुँचेगी। इसीलिए हम कहते हैं कि स्वामिनारायण मंत्र जीवंत मंत्र है। इन्स्टन्ट लीविंग मंत्र-आजमा कर तो देखें ! हमें अहसास कराएगा कि तुम्हारी प्रार्थना सुनी है.....

.....निष्ठा है–उसका लक्षण एक है कि फट से वो आवाज़ चालू हो जाए-'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण.....'। वो समझे तुम्हारी निष्ठा है.....

ब्रह्म मूर्तिमान है और उसका व्यापक स्वरूप भी है....जैसे मैंने कहा कि काकाजी की ये सारी बातें अक्षरधाम की बातें हैं। अक्षरधाम की बातें क्या है? कि–जहां पर सबकी पूर्णाहुति है, वहां से हमारी शुरुआत है। स्वामिनारायण, गुणातीत समाज, गुणातीत ब्रह्मज्ञान-जहां सारी फिलोसोफी की पूर्णाहुति होती है वहां से हमारा चालू होता है। दूसरे लग पड़ते हैं प्रभु पाने-प्रभु के दर्शन के लिए। वो तो हमें काकाजी के स्वरूप में-गुणातीत स्वरूप में मिल गए हैं। अब उनके होकर जीना है। उनके सुख को पाना है-उन जैसे ऐश्वर्य-सामर्थ्य को पाना है। इसीलिए लगे हुए हैं। साधु बनना है तो उसकी कवायत लेनी पड़ती है। सबसे पहले उसके लिए जरूरी है विनम्रता-दासभाव.....प्रभु जैसी सत्ता, सामर्थ्य, ऐश्वर्य आ जाए फिर भी गरीब, रांकभाव

से, दो हाथ जोड़कर हम हमेशा रहे तब प्रभु के सारे कल्याणकारी गुणों का वारिसदार बन सकता है....भगवान हमारा अहित कर ही नहीं सकते। अरे ! एक माँ नहीं करती ! लेकिन हमें निष्ठा नहीं है या हमें भगवान के सिवा और कोई चीज़ चाहिए या भगवान के सिवा और कोई प्रभाव है–कोई सत्ता का प्रभाव है। जिसे सच में प्रभु का संबंध रखकर जीना हो, उसके लिए ही ये बातें हैं। उनका व्यापक स्वरूप बराबर तत्त्व से पहचाना जाए तो सभी लीलाएँ लगेंगी। निर्भयता कहो, निश्चिंतता कहो, शांति-ये प्रगट की ऐसी निष्ठा होगी ना, उसे रहेगी। अगर जीवन में शांति, सुख और आनंद चाहिए, तो ऐसे प्रगट प्रभु का पक्का संबंध कर लें। उसी से वो मिल पाएगा। .....स्वरूपलक्षी समझदारी जीव में दृढ़ होनी चाहिए। जीव, इन्द्रियाँ, अंतःकरण ये तीनों में होनी चाहिए। जब तक नहीं होगी तब तक गुरुजी यानि-ऐसे प्रगट स्वरूप वो प्रसंग खड़े करते ही रहेंगे। हाँ, प्रोटेक्ट करते रहेंगे कि कुछ गड़बड़ ना हो जाए ! इसलिए कई बार कहते रहते हैं ना-भजन करो सब ठीक हो जाएगा। काकाजी का आज तक का एक भी केस बिगड़ गया ऐसा मैंने सुना ही नहीं.....कहीं भी कोई काम करें तो-'स्वामिनारायण.....' एक सैकेण्ड और फिर काम पर निकलें....भगवान को याद करके चलें-सब के प्रेरक–नियंता कौन? प्रभु ! दिव्य ही मानना....कोई भी अनहोनी बनती लगती है, कोई भी गड़बड़ आती है, कहीं भी हलचल जैसी लगती है-अंतर से प्रार्थना करना शुरु करें। अपने प्रभु तो प्रगट हैं-तुरन्त ! मैं कहता हूँ पांच मिनिट ज्यादा से ज्यादा –हमारे मन को तो वे शांति दे ही देंगे। फिर सारी मशीनरी अपने ढंग से सेट होकर सब कुछ ठीक हो जाएगा। सर्वोपरि उपाय–'प्रभु सहाय करो-स्वामिनारायण.... ।' यही लगन लगा देने जैसी है, कुछ करना नहीं है। मूड– टेन्शन रहने नहीं देना। आनंदोब्रह्म कि बस प्रगट प्रभु-वो मेरा सब कुछ करेगा।

.....मैं यह मानता हूँ कि हम जिस रास्ते चल रहे हैं वह एकदम अंजान रास्ता जरूर है। इसलिए हम थोड़े डरते भी हैं... हाँ, प्रभु पूरा रास्ता तो एकदम नहीं दिखाते, लेकिन एक-एक कदम पर रास्ता साफ है उसकी टोर्च जरूर देते हैं.....कभी ऐसा नहीं समझना कि प्रभु हमें अंधेरे में रख कर काम करेंगे.....उसके जैसा दयालु कोई है नहीं, लेकिन हमें करना ही नहीं है... सिर्फ गाया करना है और इसलिए इस रास्ते हम चल नहीं पाते। तो अभी आज काकाजी की जयंती का दिन है। हम चलने लगेंगे तो हमें तुरन्त एक-एक कदम पर रास्ता दिखाएंगे। अंधेरे में वो ले ही नहीं जाएंगे.....भगवान खुद ज्योतिर्स्वरूप हैं, हमें अंधेरे में कैसे ले जाएंगे? प्रकाशमय स्वरूप हैं-अंधेरे में कैसे ले जाएंगे? तो इतना भरोसा हमें रखना.....' प.पू. गुरुजी की परावाणी का लाभ लेने के बाद सभी ने प्रसाद लिया.....

✡

★ **15 मई से 16 जून** तक अनिर्देश में रोज सुबह 6.30 से 8.30 तक धून्य, भजन, कथावार्ता का अखाड़ा जमा रहा....पंजाब, मुंबई, अमदावाद आदि से भी हरिभक्त विशेष रूप से इस धून्य के लिए दिल्ली आए.....सुबह करीब सवा छः बजे तो सभी भक्त परिवार समेत अत्यधिक उमंग-उत्साह से आना शुरु हो जाते। दूसरी ओर प.पू. गुरुजी का परिश्रम देखकर भी आँखों में पानी आ जाता कि इस भजन दौरान वो सुबह पांच बजे अपनी पूजा में बैठ जाते.....देखा जाए तो जीव को सुखी करने की गरज तो इन संतों ने रखी है। प.पू. गुरुजी के वचन से, प.पू. गुरुजी की सेरेछाया में करीब डेढ़ सौ मुक्तों को इस तरह भजन करते देखकर प.पू. काकाजी भी कितने अधिक प्रसन्न होते होंगे ना !

सुबह 6.30 बजे-पहले उगती प्रभा, श्लोक आदि गाकर 40 मिनिट धून्य सभी करते....उसके पश्चात् 'गुरुभक्ति यज्ञ' पर प्रकाशित हुई प.पू. काकाजी के पत्रों की पुस्तक 'ब्रह्मप्रवाह' में से गुरुजी एक-एक शब्द का अर्थ उदाहरण दे-देकर, प्रसंग बता-बताकर खूब बारीकी से समझाते.....प.पू. गुरुजी की इस कथावार्ता दौरान अनेक हरिभक्तों को अपने मन की उलझनों के, प्रश्नों के हल मिलते.....व्यावहारिक व मानसिक रूप से अत्यधिक थके हुए दिमाग को जैसे एक अनोखा सुकून मिला और रोजाना के जीवन में अत्यधिक सहायरूप कई ब्रह्मसूत्र मिले.....उन सूत्रों के अनमोल लाभ से सभी लाभान्वित हो सकें-इस भावना से वे सूत्र 'भगवत्कृपा' के अगले अंक में रखेंगे.....

✡✡✡

चातुर्मास (16 जुलाई '97 बुधवार से 11 नवम्बर '97 मंगलवार तक) के विशेष नियम.....

आषाढ़ शुक्ला एकादशी यानि नियम की एकादशी..... जिसे देवशयनी एकादशी भी कहा जाता है। इस दिन से भगवान शयन करने जाते हैं..... सो, वृत्तियों को संयम में रखने–जीवन को आध्यात्मिक मोड़ देने के लिए इस दिन से लेकर कार्तिक शुक्ला एकादशी तक सब अपने गुरु से चातुर्मास के नियम लेते हैं.....

हम सब प्रगट के उपासक हैं। उनके जोग में हैं, सो उनके साथ एक संबंध हैं..... हम सब के जीवन में उनका अनुभव भी है। इस संबंध को संभालने हमें जीवन की हर एक क्रिया करनी है, जिससे इन गुणातीत पुरुषों के अन्तर की प्रसन्नता के पात्र बन पायें..... चातुर्मास के पवित्र दिन भी अब नज़दीक आ रहे हैं। तो इस चातुर्मास के दौरान हमारी जीवन पद्धति में बदलाव लाने, आध्यात्मिकता में प्रगति पाने, हमारे समग्र तन्त्र के जीवन कोषों (cells) को दिव्य बनाने विशेष रूप से सुबह-शाम आधा-आधा घंटा समय निकाल कर नियमित भजन करने का

विशेष नियम लें। शूरवीरता रख कर, समय व संजोग, देह व मन को ठुकरा कर प्रभु को प्रसन्न करने का निशान रखें..... प्रभु तो हमें सहायरूप होने सदा तैयार ही बैठे हैं। पर, हमारे बदले नियम तो वो नहीं बरतेंगे? सो, सुरुचि रखकर कोशिश तो हमें ही करनी है।

कई बार हमें प्रश्न उठता है कि भजन कैसे करें—जो अचूक प्रभु को पहुँचे ही.... भजन मैकेनीकली करने का कोई अर्थ नहीं..... भजन प्रगट की समझदारी से व आनंदपूर्वक करना चाहिए। तो जब हम भजन करने बैठें, तब जिस सत्पुरुष से हम जुड़ें हैं—उसे सामान्य या हम से थोड़ा बड़ा व्यक्ति मान कर नहीं, बल्कि प्रभु का ही साक्षात् स्वरूप मानकर उसकी शक्ति का, गुणों का, महिमा का, हमें उसके द्वारा हुए अनुभवों का, उसकी निर्दोषता का, उसकी दिव्यता का, कॉमन लेवल पर आकर हमारे साथ किए सहज वर्तन का मनन् चिंतन करते हुए भजन करें। यूं करने से हम सत्पुरुष को अपने भीतर में अनुभव करेंगे और धीरे-धीरे उसके साथ की हमारी एकता होती जाएगी।

रात को सोते समय की प्रायश्चितरूप प्रार्थना पर तो प.पू. काकाजी हमेशा अत्यधिक जोर देते थे। रात को सोते समय अपने पूरे दिन की दिनचर्या पर हम विचार करें। स्वयं का आत्मनिरीक्षण करें कि सारे दिन में मैं कब, कहाँ, किस कारण प्रभु की मर्जी के मुताबिक जीने में चूक गया? आत्मनिरीक्षण यानि—हम से करी गई क्रियाएँ, वृत्तियाँ, कई प्रकार के एटेचमेन्ट्स और मन के विचारों में हम कहाँ बह गये, किस कारण हम ऐसा वर्त गये—यूं बारीकी से भीतर में तलाश करना। जैसे कि-

1. **स्वयं द्वारा किए गए कार्य की किसी ने टीका-चर्चा करी तो हमें उदासी आ गई?**
2. **स्वयं द्वारा करे गए काम की किसी ने रजिस्ट्री नहीं करी तो दिल में दुःख हुआ?**
3. **अपनी प्रशंसा हो तब दिल में गुदगुदी हो या तो फूले नहीं समाये और अहंभाव प्रगट हुआ?**
4. **अपने काम के बीच में रुकावट करने वाले पर गुस्सा आ गया-चिड़ आ गई?**
5. **हमसे अधिक किसी दूसरे के काम की या दूसरे की ज्यादा सराहना होने पर हमारे मन में डंक लग गया?**
6. **हमारे द्वारा किए गए किसी काम में सफलता ना मिलने पर हम दुःखी हो गए?**

आत्मनिरीक्षण के अंत में दिल से क्षमा-याचना करना और—सभी से दिल से आंतरिक क्षमा माँगना-जिसे प.पू. काकाजी जॉयस फरगिवनैस कहते थे। इसके फलस्वरूप बहुत ही थोड़े समय में सुन्दर परिणाम आएगा और दिन-प्रतिदिन हमारी शांति, सुख और आनंद की मात्रा बढ़ती जाएगी—जो कि हम जहाँ होंगे, जहाँ जाएंगे-वहां आनंद-आनंद और आनंद की ही बौछार करते हुए आध्यात्मिक मार्ग में चलने में बहुत उत्साहित बनाएगी.....

तो आईये, इस बात को ध्यान में लेकर चातुर्मास के निम्न नियमों को पाल कर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हों व गुणातीत स्वरूपों की प्रसन्नता प्राप्त कर लें.....

1. छोटी-मोटी हर एक दैनिक क्रियाएँ-जैसे सुबह उठना, बोलना, स्नान करना, चाय-नाश्ता करना, भोजन करना, बाहर जाना-आना, सोना आदि का आरम्भ भगवत्स्वरूप संत की स्मृति समेत एकाध मिनिट जपयज्ञ या अजपाजप करके ही करें।
2. **संत का ऐसा जोग दिया, उसके धन्यवाद स्वरूप** रोज सुबह उठते ही हमें मिले प्रगट गुरुहरि की स्मृति करके तीन मिनिट ध्यान में बैठकर इन्हें 'धन्यवाद-धन्यवाद' कहने का अभ्यास करना।
3. जिन्हें सुविधा हो वे-सुबह के भजन व शाम की धून व कथा में मंदिर या सत्संग केन्द्र में आयें। जो ना आ पायें वे अपने घर पर सुबह 15 मिनिट धून व सायं आरती के बाद 15 मिनिट धून अचूक करें।
4. भजन के साथ स्वामी की बात प्र. 13 की बात 4 में स्वामी ने वृद्धि पाने के लिए चार उपाय बताएं हैं वे निरन्तर नज़र के सामने रखना.....
5. मंदिर/सत्संग केन्द्र के जो करीब रहते हों या काम पर जाते हुए जिन्हें मंदिर/सत्संग केन्द्र रास्ते में आता हो व जो बहनें मंदिर आ पायें—वे प.पू. काकाजी की 'पुष्पसमाधि' की या सत्संग केन्द्र में ठाकुरजी की रोज 31 प्रदिक्षणा करें और जो रोज ना आ पायें वे चातुर्मास दौरान मंदिर/सत्संग केन्द्र में जब भी आये तब 51 प्रदिक्षणा कर जायें।
6. मंदिर/सत्संग केन्द्र से जो करीब रहते हों, वे सायं आरती के दर्शन करने आ जायें। जो मंदिर/सत्संग केन्द्र में ना आ पाते हों-वे घर पर परिवार में जो-जो हाज़िर हों सब मिलकर हर रोज सायं आरती करें।
7. सावन का पूरा महिना यानि-4 अगस्त, सोमवार से एक सितम्बर, सोमवार तक एक बारी भोजन लें।
8. 16 जुलाई-नियम की एकादशी, 25 अगस्त-जन्माष्टमी, 13 सितम्बर-जलझीलनी एकादशी, 11 नवम्बर-कार्तिकी शुक्ला एकादशी—इन चारों दिन अवश्य पक्का व्रत रखें।
9. हर शुक्ला नौमी, एकादशी व पूर्णिमा पर मंदिर दर्शन करने आ जायें।
10. अवतार पुरुषों व भगवत्स्वरूप संतों की जीवनी एवं

वचनामृत, स्वामी की बातें, पत्र संजीवनी व ब्रह्मप्रवाह जैसे अध्यात्मग्रंथों एवं 'भगवत कृपा' सत्संग पत्रिका के मननीय लेखों का रोज नियम से अध्ययन करें।

11. प.पू. काकाजी को 'सुहृद्भाव' खूब पसंद था, तो हम अपने साथी मुक्तों के साथ मिल-जुल कर रहें और हर प्रसंग पर गुणातीत स्वरूप को ही कर्ता हर्ता मान कर उसका सहर्ष स्वीकार कर पायें। इस हेतु रोज सुबह पूजा में प्रार्थना रखें और रात को सोते समय 10 मिनिट-प्रायश्चित रूप प्रार्थना कर लें।

12. रोज सायं या रात्रि को आधा घण्टा तेज़ वॉकींग करें।

✡✡✡

स्वामी की बातें

558. .....त्यागी को सिर्फ स्त्री के सिवा दूसरे किसी विषय का त्याग है? और विषयों में अरुचि भी कहां हुई है? वह तो भीतर में टटोल कर देखें तो पता चले और स्त्री का त्याग भी स्थूल रूप से ही है। तब भी उसे दूर से निहार लेते हैं। त्यागी होकर तो बैठे हैं, पर टटोलना कि कितना त्याग किया है?

प्र-5,403

559. ऊपर से भगवा पहना है, लेकिन जीव कहाँ भगवा हुआ है? यह भी ख्याल रखना।

प्र-5,405

560. 'वासुदेव हरे' बोलने पर जैसे तुरन्त उठ पड़ते हैं, यूं किसी काम से बड़े बुलाएँ, तब ना उठा जाये, वह कसर कही जाये।

प्र-5,406

561. एक साधु ने कहा-हमारे नसीब में लड्डू नहीं थे और यह तो भगवान के प्रताप से–उनकी इच्छा से मिल रहे हैं, सो खाने में हर्जा नहीं। तब स्वामी बोले कि यह सोच गलत है, क्योंकि खाना-पीना तो कई विमुख लोगों को भी मिलता है। तब किसी ने दलील करी कि– महाराज भी तो संतों को लड्डू आदि खिलाते थे। तब स्वामी बोले कि-इस बारे यूं समझना कि जीव को महाराज की स्मृति रहे इसलिए खिलाते थे। वर्ना महाराज का ऐसा मत नहीं था कि विषय भोगें।

प्र-5,407

562. खा-खाकर मोटा होना और अधिक सोना-यह दो बातें मुझे पसंद नहीं आती क्योंकि यह दोनों वासना के हेतु हैं। मन भी खाली रहे तो व्यभिचार करता रहेगा, सो खाली नहीं रखना।

प्र-5,408

563. भगवा लेने के बाद देहाभिमान बढ़ जाता है और फिर कोई कसनी में ले तब दुःख होता है।

प्र-5,409

564. गृहस्थ रुपये-पैसों का भजन करते रहते हैं और त्यागी देह का भजन करता रखता है।

प्र-5,410

565. सयाना हो उसे डॉटे तो वह खुश हो और मूर्ख की तारीफ करें तो वह खुश हो-यूं महाराज कहते थे।

प्र-5,411

566. भगवान व एकांतिक संत-इन दोनों का स्वभाव ऐसा कि इस लोक में उनके बोलने-करने का तालमेल नहीं होता। बाकी दूसरों को तालमेल, वह प्रत्यक्ष दिखाई देता है।

प्र-5,412

567. बड़े के साथ लगाव हो तो वासना वाले को भी अंतर में सुख आयेगा, वर्ना तो निर्वासनिक हुआ हो, तो भी रुखा है। प्र-5,413

✡✡✡

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 30.6.97 सोमवार – एकादशी, व्रत
(2) दि. 16.7.97 बुधवार – नियम की एकादशी, निर्जला व्रत, चातुर्मास प्रारम्भ
(3) दि. 20.7.97 रविवार – गुरुपूर्णिमा

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Bharat Pakaging and Allied Industries** C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110064